नवजात पशुओं में दस्त का प्रबंधन

डा० रणवीर कुमार सिन्हा[1] एवं डा० बिभा कुमारी[2]
[1]सहायक प्राध्यापक, औषधि विभाग
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय, पटना
[2]बि०व०वि०, कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल

दुधारू पशुओं के नवजात शिशुओं में दस्त होना एक प्रमुख बीमारी है। एक माह से कम उम्र के पशुओं में संक्रामक दस्त से अधिक संख्या में मृत्यु होती है। इस रोग का प्रमुख कारण "ई कोलाई" नामक जीवाणु है। परन्तु इसके अलवा कुछ विषाणु, जैसे "रोटा विषाणु" एवं "कोरोना विषाणु" का संक्रमण भी नवजात बछड़ों में दस्त पैदा करने का कारण है। इस बीमारी का प्रकोप भैंस के बच्चों में सर्वाधिक देखने को मिलता है।

प्रमुख लक्षण :

1. पानी की तरह पतला दस्त होता है।
2. दस्त का रंग हल्का पीला अथवा सफेद होता है।
3. कभी–कभी दस्त में खून का धब्बा भी दिखाई देता है।
4. दस्त काफी बदबूदार होता है।
5. डिहाइड्रेशन के कारण शरीर का वनज घट जाता है तथा शरीर का तापमान सामान्य से कम हो जाता है।
6. आँखें धँस जाती है तथा बच्चा कमजोर हो जाता है।
7. चिकित्सा के आभाव में 2–3 दिनों के अन्दर प्रायः बीमार पशु की मृत्यु हो जाती है।

अन्य सहायक कारण :

1. बच्चों में व्यायाम का आभाव।
2. बच्चे को कोलस्ट्रम/खीस/फेनुस का न दिया जाना।
3. बच्चों की आँतों में गोल कृमि पड़ जाना।
4. दूध का अधिक मात्रा में पिलाना।

चिकित्सा :

1. दस्त रोकने के लिए कारगर औषधि जैसे सल्फा–ट्राईमेथोप्रोम की गोली अथवा इंजेक्शन, फ्युराजोलीडीन की टिकिया या घोल का उपयोग पशु चिकित्सक की देख–रेख में करें।
2. शरीर में पानी की कमी को दूर करने के लिए "नार्मल सेलाईन" या आर० एल० के घोल को नस में सुई द्वारा पशु चिकित्सक से दिलवाएँ।
3. बच्चे को पतला चावल का माड़ देना चाहिए।

बचाव :

1. बछड़ों के जन्म के दो घंटे के अंदर खीस (कोलोस्ट्रम) अवश्य पिलाएँ। इससे रोग संक्रमण के विरूद्ध प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
2. बछड़े के जन्म के तुरंत बाद उसकी नाभि में "टिनचर आयोडिन" अथवा बीटाडीन लगाएँ, ताकि इसके जरिए कोई संक्रमण शरीर के अंदर प्रवेश न करे।
3. जन्म के 10 दिनों के अन्दर अन्तः–कृमीनाशक दवा बछड़े–बछिया को उचित मात्रा में पशुचिकित्सक की सलाह से पिलाना चाहिए।
4. बच्चे के रहने का स्थान साफ–सुथरा तथा स्वच्छ हो।
5. बीमारी फैल जाने पर प्रत्येक बच्चे को सल्फा–ड्रग्स पशु चिकित्सक की सलाह से देनी चाहिए।